

श्रीगोपीजनवद्वभायनमः।
अथनवहलासलिरव्यने।
श्रीगोकुलेशोजयनि॥



श्रीस्वामिनीजीकीसहचरीकुं
आदिपूर्वकओरसखीपुछन
हेजेहेसुमुखीमेरीस्वामिनी

जुलक्ष्मीहनेअधिकहे॥निनसों
दाकुरसोंकेसेनूतनसंगहोन
भयोसोकहो॥१॥ताकोउत्तरक
हनहे॥हेसखीकहोदरीइहां
तोदंजाननहीहेमेंतोसोंकहन
ह॥यहकथातोहमदासीओकी
जीवनरूपहीहें॥२॥निकुंजमें
स्वस्वामिनीजूकीसखीएकटी
होइकरि॥फलनकीसिज्याकी
रचनाकरनहें॥नहांएकसखी
नेप्रसन्नपुछ्यो॥इसरीअंतरेग

हु. न.
२
सरणी ने क लो ॥ सो सब सरणी ने
सुन्यो ॥ नव अपनी अपनी की
सुधि आई ॥ नव मी निके भरक
रि वर्ध सो हो न भई ॥ ए से स्नेह
को भर दे खि के लक्ष्मी ह को म
नह खो जा न हो ॥ नव ने वरदान
ठाकुर ने दी यो ह नो वे दिवस वि
खें ॥ ना दिन को जज सुंदरी यन
के नेत्र क मल के भाग्य को फल
एक च होइ के ॥ श्री ज सो दाजी
विरें प्रगट हो न भए ॥ नव नेत्र

ज सुंदरी यन को नो ठाकुर के
विषें सह जही मी नि हो ॥ परि ठा
कुर को श्री मी या जी विषें अधि
क अनु राग हो न भयो ॥ सखी
ने पृथ्वी ह नो ना को उ न र क
लो ॥ ठाकुर प्रगट भए पाछे
क वह क श्री कालिं दी नी के पु
लि न विषें के से सो ह न हो ॥ पुलि
न जहां क मल जा को धन हो ॥
आ मोद बहन सी नल मंद सुगं
ध नि वि धवा यु वह न हो ॥ नाइ

चिन्तवंधानो॥ नवमृगानय
नीकीइष्टिठकुरकेवदनचं
दविषेवहुतकाललोंपरतभ
ई॥ नवमृगनेनीकेवदनचंद
परठकुरजीहकीइष्टिपरत
भई॥ निमेषानिमेषदोऊन
कोहोतभयो॥ ६॥ जबहीचा
बिनेचएकचभयो॥ नवहीअ
लोकिकभावकेसमूहपगट
होतभए॥ नवमीचाजूकैआ
टअवस्थाकेभावपगटहोत

शहंदावनविरवें श्री प्रीयाजी
आपुनीसर्वाकेअनंतजूथ
लेकेप्रियाजूआवनभई॥ न
हांआईकेदेखेंगो॥ ठकुरगो
पीजननकेअसंख्यानजूथ
नसोंविहारकरतदेखे॥ ५॥
नहांप्रियाजूकीसहचरीप्रिया
जूनेंठाकुरदेखे॥ नवबहुत
काललोंचिकेनइष्टसहिन
श्रीमुखमेंअगाधिसमुद्रमें
इव्यो॥ पहिलेनेजलगो॥ पाछे

भए॥ संभना॥ जडना॥ सोमां
च॥ आलस्य॥ ज्यंभए॥ वैक
ल्यना॥ आनुरना॥ हर्ष॥ एहो
नभए॥ ठाकुरसों नूनन प्रेम
करि पूरि हृदय भयो॥ ना नें अ
वकास नाहीं॥ सुंदर ठाकुर के
भाव सहित कटाक्ष हृदय के भ
नर पेटे॥ ना नें व्याधीजू अ निश
य अ भिलाष॥ सब सखी को क
ल्याण को विचार्यो॥ या प्रका
र सखी परस्पर वा नो कर नहे

सो आसि र्वाद दे न हो॥ में ठाकुर
कहं सुंदर मनोहर कमल एक
ही बार हनै देख्यो॥ अब के ह करि
हम संयुक्त निरूपम श्रीमुख
दुसरि बार निकट नें देख्यो मनो
ज वनूं देख्यो वेगी नव नो कहो में
कहा दें ऊं॥ कहो गो बडी वस्तु मेरे
प्राण हे॥ सो प्राण हरे वेद करि क
हत हो॥ जो ठाकुर दृष्टि करि चुग
य लीयो॥ तो में तेरी अरणी रहूं
गी॥ ८॥ या प्रकार गाद्य बाणी

हुने ५
आधे आधे वचन सों प्यारी जू
के कहे सुनिकें चतुर सह चरी
ने सब गुण ठाकुर को निकट
देखावन ॥ श्री प्रियाजू को निक
ट दिखावन भई ॥ के सी सह च
री ॥ जे प्रथम मिली प्रकी वान
कहत है सो सखी ॥ देखावन
श्री प्रियाजू को कहत है ॥ इहां श्री
हंसावन विषे हरी अ संख्यान
ब्रज सुंदरी न के साथ की डाक
र नहें ॥ जे से मन गज राजक

दिली न सों श्रेष्ठ की डाकर नहो
इ ॥ तहां को टिकंदर्य को मान भ
गकरि विलास करत है ॥ ८ ॥
ठाकुर के सेहें ॥ चंचल विलो
चन विषे भाव पूर्वक कोऊ क
ब्रज सुंदरी ने नक मल न करि
ठाकुर की इजाकर न भई ॥ ओ
र ठाकुर अव्यक्त गान करि ॥ कु
मारी अति — सो गीताई बहु
न पीडा बहुत संताप को प्राप्ति
न भए ॥ सो वाली करि कहा कहै

वहुकाल्यों विरहकरि प्रिया
जुअसंग - स्यकरि ॥ विरह
घानकों सहि नाही सक ना ॥ ना
नें कोऊ एक निजुं जविषे केसे
हें निजुं जगुं जाकर न हे भ्रम
रजहां जहां नाइ सनिको आभ
यकरि के ॥ छिपकें एकांत होइ
के वेठे ॥ नहां दीन ना मन में ध
रिकें आधुनी अनिरंग सखा
कछू कह न भई सो आगे कहें
गे ॥ हे आली एक जुवनी के जू

थसा थहरी विहार कर गहे ॥ न
हां नहां अत्यंत को मल विगुण
वायु से वा कर गहे ॥ कहा कहं मे
री बाणी के विसे नांदीये ॥ ठाकु
र मेरे मन में खेल गहे ॥ हे सह
चरी मेरी इष्टि गोठा कु र की सुं
दर ना ओर आधु र्य ना करं एण
कर गहे ॥ ओर मनोहर हास्य वि
षें इष्टि परत मा न जान रही ॥
जान भई न बगानि आगे चलै
सो कोन ॥ ओर सर्वांग ठाकुर के

हुं न ७

सेहैं॥ कोटिकंदर्पसों दया भृगु न स
हिन श्री मुख नो भेंदे व्योही ना
हीं॥ में जानत हं जो यह कंदर्प प्र
गट भयो मानो॥ या नें या के नें
नवाण मोहूं अत्यंत व्यथा कह
नहे॥ इनकी वान सरवी प्रीति क
ही॥ एसी प्रिया जूझो हो न भई॥
ठाकुर के सेहैं॥ सुंदरी न सो रम
ण करि ठाकुर की वन माला वि
लुलिन विहार कर न भई १२
ठाकुर कोऊ सुंदरी के साखेय

हिवे कुंध स नहे॥ इन नें एक सुंद
री नें जो पी आनि आगे राखी॥ का
इन नें बहुत हास्य हो न भयो॥ का
ह मुग्ध सुंदरी की नीवी देख नहे
॥ सो भय करि ललित नहे नेत्र॥ ना
सों रम नहे॥ सो प्रीय सरवी श्री
प्रीया जूझु रवन विषे अने
क सुंदरी सो विलास कर नहे॥
निकुंज विषे बैठे हैं॥ तहां अंगुल
येक दिखावन भई॥ कोऊ एक
सुंदरी विरह करि दूबरी आनि

हुं न
८

स्य नाठाकुरके विरह करि दूब
नी अति - स्य नाठाकुरके अनु
प्रास्य करि आई भई ॥ सो गांन
विद्या में अनि नि पुन हो ॥ रनि सं
गाम में धी रहो ॥ १३ ॥ कोऊ सुंद
री को अंगद न दूखि पूज्यो ॥ वि
लास करि सुसु चर्मन पाछे ॥ का
ह एक सुंदरी को कन ग्रहण करि
नाके साथ आलस्य संचलिन
डगमगत चरण धूलि यमान
नयन ॥ आलस वलि नलीला

करन चलन हो ॥ हे गधे गा दश
हस्र आनंद सो नरो मनोरथ
हरि रास मंडल में पूर्ण कर्यो
॥ १४ ॥ के से हैं ठाकुर कमल
नं सुकुमार ॥ एसें ठाकुर श्री
कालिंदी जी के उपवन विषे
विगुण बहुरह न हो ॥ नहां वि
लास को करन हो ॥ ठाकुर के से
हें ॥ कालिंदी जी के नट विषे उन्न
न हो ॥ भ्रमर के दूध ने से सुगंध
पुष्प के भूषण ना करि ठाकुर

हु.न.
२

पूजित हैं। ओर ठाकुर अव्यक्त
है। मधुर स्वर करि मुर लिका
व जावन है। ना करि मोहें जा
न। गोपीजन एना दृश रहि सो
तुझा रोअ संख्या न मनो रथ
पूर्ण करो आसि वाद रहे न हो॥
इति श्री मथ महु आस सं पूरा
॥ १ ॥ ॥ श्री ठाकुर जी के सेहें
रति के लए भरक रिहार दंडि
राए हों। मोतिन के हार ए सेठ
कुरह देखि के श्री प्यारी जीव

हुन काल सो देखि रहो॥ देखो भो
को छांड़िये से उन्मत्त के लिओ
गोपी सायक रहें। गोपिन प
रइ सकरि उहां रहि वहुं आस
क्त भए॥ ओर ठाकुर विषे अत्यं
त आसक्त के वसनें जाय न
ही सकन। आ प्रकार भीयाजू के
मन दोलाय मान हो न भयो॥
नदनं मनहां ने एक ओर स्थ
ल आइ के। कोऊ एक निहुं ज
भवन की लीला ना में आइ के।

केसीलजाजाकेमकरंदपान
करिउत्तमभएहेंभमरनानि
कुंजकेसिरवरपरश्रायायमान
गानकरनहे॥त्रिविधवायुवह
नहे॥निसर्गस्नेहार्द्रसखीकुं
संबोधनप्रीत्याजूनेजकमल
कुंकहुकमुदिनदृष्टिहोइकेवा
रवारकधूसखीप्रतिकहनभ
ई॥यहभेरोमनसहचरीएक
क्षणदाकुरकोत्सजननाही॥
ओरअखनआतुरहहे॥ओर

ठाकुरकेत्रिविधभावकरिक
दाशकरिद्वोडेहेंवांन॥ठाकुर
रकेइहांभावकरिमेरीगतिपं
गुहोइगईहो॥गानेंचलननाही
मधुरअव्यक्त॥मधुरनादकरि
मुगलीनादकरिविशेषमोहि
नकीनेहो॥भजजुवनिनकेजूथ
गासोंविलासकलिकरिगाके
वसहोइगएहेठाकुर॥गोहभेरे
नेचकोंदेरिकरिअनुंनसुख
भयो॥ओरमनुष्यमृत्प्राणहूँ

पंथी एतो चित्र खे घन रे से
 करि राखे हैं ॥ २ ॥ हे सखी ठाकु
 र के से हैं ॥ जे से हठी लो उन्मत्त
 महा गजराज होइ ते से अटक
 न चल गहो ॥ आपुनें गवि सो ॥
 मंथरा गति सो विलास करन ॥
 नाइ शठाकु र मंदहास्य करि कं
 दर्प काह जो पिका भाव को करे ॥
 ओ रई क्षण की विचक्षण को
 कहा लो कहिये ॥ ओ र मुख चं
 इ की सो भा ओ र वचन की चानु

दी सब लक्षण को जीने हो ॥ अ
 मृत के समूह आन्य धर्म करि क
 हत हो ॥ जो एताइ सब स्मृतो वि
 भुवन विषे ओर नही ॥ ठाकु र जी
 ने अपने लिलाट विषे सुंदर
 क स्मृती को निलक की नो हो ॥ ना
 ऊ पर प्रियाजू को मुक्ता फल को
 चंद लो को निलक के निमिन
 धरन भए ॥ प्रिय सखी ने प्राण
 पेष्ट ॥ ठाकु र ने आपनो अदला
 वदला की नो हो ॥ नो सोई धर्म को

कहावचनकरिकह्यो॥ जाय
ठाकुर ऊंचे स्वरगानहहैं॥ ता
समें काहगोपीने विगाट भाव
करि निकट मनोरथ करन भ
ई॥ ठाकुर के सेसुधर गावन हो
जो स्थिर नर रहें॥ श्रीवाको भूष
ण वेध रहें॥ एताइ समाज कर
न मन कोहरन हें॥ ३॥ ठाकुर के
सेहें॥ जो वा मपरावन श्रीवाओ
र ऊंचे कुंचल नहें॥ ननकुचक
अरु टेढ़े हैं चितवों॥ ओर संको

जोह अधर पल्लव॥ ओर मुरादि
का धरीहो॥ अधर ओर नक सोरा
ऊंचे कुं फल हें॥ एताइ सहोइ के
भव विषीय चरण करन हो॥ त्रि
नच भंग होइ॥ नव आनंद सो से
वा भोग्य॥ सुधा को पूर्ण करि दू
रि करन हें॥ नवहें अंभोजालक्ष्मी
नाहीं जानत जो एताइ समनवप
कार को सहाय करि कलत्रिजग
ती को कहा कीयो चाहन हें॥ ४॥
अव पीयाजू कहन हें॥ जो ठाकुर

हु.न.
१३

के प्रति अंग की वाताहो ॥ एके
क अंग को सौंदर्य कथो न जाय ॥
कोटि कंदर्प के मन को हरे ॥ परि
क न भंग के संस्था न को नो कहव
रण न करह ॥ जामें सकल सोभा
को विकानो हो ॥ जाते मेरी दृष्टि औ
र सरीर ॥ और चतुद्रय मन ॥ ताको
विवेक धैर्य की गति को ॥ तलि
न न भंग मूर्त मेने प्रगट भई है
सो मे मान नहुनी जो विधान ने
एनाइस विधिकनी जो इयस

रीर मनादिक की गति को भंग की
नो हो ॥ याते मे एनाइस पंगु हो ॥
ठाकुर को हास्य संयुक्त जो भाषण
करत श्रीमुख ने अमोद निकस
न हो ॥ ताके पान करि मन भए है
जो भ्रमर ॥ ताकरि ठाकुर वेचन
हो ॥ एनाइस ठाकुर यह वेणु नाहीं
पूरत ॥ तो कहावेणु नाइ द्वासा की
मिस करि मोको अधरा मृत पुर
न हो ॥ मोहि को वेणु परि न हो ॥
काहे ते जो मेरे बडे नन मे अनुभा

हु.ने.
१४

जा निमि सह अंग राय क रि सो
म ति हो ॥ ता नें बी च ने रो म न ह
रा व न भ ए ॥ ता ठो र आ पु ओ र
अ प ने अ ध र क रि पू र्ण क र न
हे ॥ ता क रि मो को र स भा व नि
भा व तो दुःख ह इ रि की यो न जा
य ॥ तो अ ली में क हा क र ह ॥ हे आ
ली म धु म आ न ॥ ठा कुर कं द र्प
को टि आ दि क्य ला व ए य हे ॥ ए न
इ स ठा कुर को मो सा थ र म ए क
र वा र्द ॥ मे के सी हं र स भा व शु क्त

हं ॥ ओ र स ने हं ॥ छु इ घं टि का ठा
कुर की म द स र न क हं ॥ नि कुं
ज में छि पि के वि चि त्र कु सु म की
श्रे या की र च ना की नी हे ॥ त हा का
ह म का र क रि ले च ले ॥ त व र नि
के लि की उ कं ठ ता दे खि हं सें गो
त व मो को क छू ए क ल जा हो इ गी
॥ भा व मे हे ॥ मे रो म न म द स र न ह
र्यो हे ॥ सो के से हें ॥ जो आ ग ले को
रि जा इ वें मे च नु र चू जा म लि हें ॥
त व मे के सी हं ॥ जो अ त्यं त म धुर

हास्यकमिकें कोमलवाणी
बोल्गि ॥ नवठाकुरमोकोवहु
न आदरसों कुसमदोयापर
वेसकसों वेगों ॥ ठाकुरमोऊपर
कृपा करेगो ॥ नवमेरसप्रकार
सों सभाधांनकरंगी ॥ ठाकुर
मेगो अंगीकार करेगो ॥ नवमे
धीरनेहं धीरहं ॥ नवठाकुरभुल
किनहोंहिगो ॥ नवमेरीकटिमे
रवलाघुघरु अनिशहायमा
नहो ॥ नवसिकागदिक अनि

प्रगट होनहों ॥ ठाकुर वंधादिकक
रिमोहुंस न्यानकरनहों ॥ हे आली
रसलीला विषेमें केसीहं ॥ कोकि
लापारप्रतिके स्वरूपकृजन ॥ न
हूकृजनादिकक रिके ॥ ठाकुरके
मेहें अमजलकणिका करि पूज्यो
हे श्रीमुखकमल ॥ ठाकुरजीके
केलिअमनें अमिनहोइ ॥ परमा
नंदकोंपानहोनभए ॥ ओरमेरी
ननलनाकीहसुधिरहननभई
एताइसपीयाजूकोंकहोंगी ॥ न

हुने
१६

वपीयाजूनेकसो जो ॥ या प्रभा
टाकुरकी मोहप्राप्त करि सो सह
चरी औरसरवी प्रियाजूकी सखी
औरसबगोपीजनकी सहचरी
मिलिके वार्ताकरनहो ॥ सो आनि
बदिदेनहो ॥ अबटाकुरके सेहो ॥
आधोपीनांवरखसि परयो ॥ औ
रआधोतिलकमिटि गयोहो ॥ औ
रखेदांकुन परेहो ॥ सुंदरीनके मन
हरनभएहो ॥ फिरिटाकुरके सेहो
जैवेगोपीसमरसके अधिकपद

दिवा सुंदरीनके वासहोइगएहो
टाकुर ॥ एनादश सुंदरीनहुं औ
रटाकुरहुं देखनहुं ॥ मेनबहुं सु
खप्राप्तकी पदवीहुं ॥ मानहोनह
दुर्माकोहे नुहो ॥ परिपीयाजूकोई
धनाहीहोन ॥ सोसबगोभावको
लक्षहो ॥ पीयाजूको कल्पदक्ष
केनरुवरके सुगंधको सोरभ ॥
औरकालिंदीजीकी सीतलना
जलकणिका करि ॥ लक्ष्मीकोम
नहस्यो जानहो ॥ नाइसबयारसु

हु.न.

१७

गंधके भरकरि हलवे बहु नहे
एसे सुख भेहो प्रीयाजूको माहा
नापसा मान्य लगानहे ॥ विरह
रि ॥ एसे फुले विविध पुष्प
मरमहि न ॥ अरी यह चंद्रमा
कि यो ह केह सुख नाही न पाव
न तो कहल करु ॥ कहां जाऊं मेरे
प्राण प्रिय को संग के भेहो ईशो
सो कहो ॥ १० ॥ मो जी हारु प्रही अ
गाध संभावा प्रन न रुणी ना को
के लि वि लास करि चुचा य राखे

हे ॥ नहां प्रीयाजू के मुखों भोज
की सो भा के सीहे ॥ कंदर्प को गर्व
दुरि करे ॥ एना इस प्रीयाजू को मु
ख कमल को अवलोक न करि
प्रगट भई जो लजा ॥ और प्री को
हास्य ॥ सो नुहारो पूर्ण मनो रथ
कों करो ॥ आसि वाद को दे न हो ॥ १२
॥ इति श्री द्वितीय ह्यास सं प्र
र्ण ॥ २ ॥ ॥ श्री ॥ मद सह नम
हाधीर वीर ठाकुर ह श्री प्रीया
जू को अप ने रह य भे धरि के आ